DR KARUNA ROY
ASSOCIATE PROFESSOR
HINDI DEPARTMENT
S.G.G.S. COLLEGE
PATNA CITY
E.MAIL - karuna_1812 @ yahoo.co.in

विशेष अध्ययन
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष
पत्र - 8
सगुण भक्ति काव्य
इकाई - 4 : 3 - रसखान की काव्यभाषा / काव्यरूप

[यह आलेख पाठ्यक्रम पूर्ण होने के पश्चात छात्रों के अनुरोध पर भेजा जा रहा है।]

ब्रजभाषा के कवियों में भाषा की दृष्टि से रसखान का स्थान बहुत ऊँचा है। उनके जैसी सरस, स्वाभाविक और आडंबरहीन भाषा का प्रयोग घनानंद जैसे इने-गिने कवि ही कर सके हैं। रसखान की भाषा में कृत्रिमता की कहीं भी नहीं झलक है। उनके भावों की कोमलता ही मानो भाषा में साकार हो उठी है। रसखान में भाव और भाषा का दुर्लभ सामंजस्य देखने को मिलता है।

कवि का लक्ष्य वस्तुतः भाव पर है, शब्दों के चुनाव के लिए उसे विशेष चिंता नहीं। जैसे शब्दों से उसके भावों की अभिव्यक्ति हो सकती है, वैसे शब्दों को उसने बटोर के ले लिया है। इस प्रकार तत्सम और तद्भव, दोनों ही प्रकार के शब्दों का उसने स्वतंत्रता से प्रयोग किया है। उनके अत्यंत प्रसिद्ध सवैया 'मानुष हौं तो वही रसखान' का उदाहरण देखिए। इसमें एक ओर मानुष, ब्रज, गोकुल, धेनु, गिरि, छत्र, पुरंदर, खग, कालिंदी, कूल, कदंब आदि शब्द अपने तत्सम रूप में हैं तो दूसरी ओर गाँव, ग्वारन, बसु, मिलि, मँझारन, पाहन, बसेरो आदि तद्भव रूप में और दोनों का मिश्रण भाषा को अप्रत्याशित रूप से गति प्रदान करता है। उसमें अनुपम प्रवाह और मधुरता आ जाता है। रसखान की भाषा में संयुक्ताक्षरों का व्यवहार (जिसके कारण भाषा में कठोरता आ जाती है) शायद ही कहीं मिले।

भाषा के श्रृंगार के लिए अलंकारों की आवश्यकता होती है। रसखान ने अलंकारों के लिए कहीं भी प्रयास नहीं किया है फिर भी उनकी रचनाओं में अलंकार बहुलता से मिलते हैं जैसे —

(1) "जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल-कदंब की डारन।"

(2) "कोटिक हौं कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।"

इन पंक्तियों में 'क' अक्षर की बारबार आवृत्ति है अर्थात अनुप्रास अलंकार है। रसखान की भाषा में कहीं भी क्लिष्टता नहीं है अर्थात कठिनाई नहीं है। उसे समझना आसान है। सरलता और सरसता का संगम उनकी भाषा की विशेषता है।

रसखान ने मुहावरों का भी प्रयोग प्रचुरता से किया है। 'नाच नचावें', 'पार न पावें', 'लेति बलैया', जैसे मुहावरे उदाहरण के रूप में लिये जा सकते हैं। इनकी भाषा में अरबी-फारसी के भी कुछ शब्द हैं जैसे बाजी, दिल, अजूबो, ताज, गुमार आदि। छंदों में सवैया, कवित्त और दोहा इनके प्रिय छंद हैं। इनके सवैये तो इतने प्रसिद्ध हैं लोग सवैया छंद को ही रसखान कहने लगे। अपने समकालीन कृष्ण भक्त कवियों की गीति-पद्धति को छोड़कर इन्होंने छंदों की मुक्तक शैली अपनायी जो इनकी मौलिकता का सूचक है।

<u>रसखान का काव्य पक्ष</u> - रसखान की कविता पर रस की दृष्टि से ध्यान देने पर प्रथम स्थान भक्ति रस को प्राप्त होता है। उसके बाद का स्थान शृंगार एवं वात्सल्य रस को दिया जा सकता है। भक्ति रस के आलंबन केवल कृष्ण ही नहीं हैं बल्कि ब्रज की भूमि, वन, कुंज, पर्वत, नदी, पशु, पक्षी आदि सभी चीजें जो किसी न किसी रूप में कृष्ण की लीला से संबंधित हैं रसखान के लिए महत्त्व रखती हैं। भले ही द्वारिका के भवन पर्वत के समान ऊँचे हो उनका हृदय ब्रज के लिए ही धड़कता है - 'मंदर ते ऊँचे कहा मंदिर हैं द्वारिका के, ब्रज के खरक मेरे हिये धरकत हैं।'

भक्ति के पश्चात दूसरा रस है शृंगार, जिसका पूर्ण रूप, उनके द्वारा किये गये होली के वर्णन में, दीखता है जब रसखान होली में सब कुछ करने की छूट देते हैं - 'अंक भरौं निरसंक उन्हें, इहि फाग पतिव्रत ताक धरौं जू।' होली में में सभी मुक्त होकर आनंद मनाते हैं। संयोग शृंगार के साथ-साथ वे विप्रलंभ (वियोग) शृंगार में विरह की मार्मिकता का भी चित्रण करते हैं -

'मंजु मनोहर रूप लखें, तब ही सबही पति ही तजि दीनी।
प्रान पखेरू परे तलफैं वह रूप के जाल में आस अधीनी।।
आँख सों आँख लड़ी जबहिं, तब सो ये रहैं अँसुवा रंग भीनी।
या रसखान अधीन भई सब गोप लली तजि लाज नवीनी।।'

वात्सल्य का वर्णन उन्होंने कम किया है पर जितना भी किया है वह अत्यंत रमणीय है; जैसे - 'धूरि भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत-खात फिरैं अँगना, पग पैंजनी बाजत, पीरी कछोटी।
वा छबि को रसखान बिलोकत वारत काम-कलानिधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों लै गयो माखन-रोटी।।'

कृष्ण के सौंदर्य और उनकी लीलाओं के अतिरिक्त रसखान ने कृष्ण के आदि और अनादि ब्रह्म के रूप का भी वर्णन किया है। उन्होंने कृष्ण का वही रूप और उनके जीवन के उन्हीं स्थलों को अपनाया है जो सभी कृष्ण भक्त कवियों को प्रिय रहे हैं। रसखान हिन्दी के उन कवियों में हैं जिन्होंने हिन्दी काव्य जगत को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है।

Mob. No. 9431881?5